

चलित्र वि. (तत्.) अपनी ही शक्ति से चलने वाला।

चलिष्णु वि. (तत्.) चलने का इच्छुक, चलने को उद्यत, गमनशील।

चलु पुं. (तत्.) पूरे मुँह में भरा हुआ पानी।

चलुक पुं. (तत्.) चुल्लू में लिया हुआ जल, एक छोटा पात्र।

चलैया वि. (तत्.) चलने वाला।

चलौना पुं. (देश.) दूध आदि चलाने की कड़खी, वह लकड़ी का टुकड़ा जिससे चरखा चलाया जाता है।

चवन्नी स्त्री. (तत्.) चार आने मूल्य का सिक्का, रुपए का चतुर्थांश।

चवरा पुं. (तत्.) लौबिया।

चवर्ग पुं. (तत्.) 'च' से 'ज' तक के अक्षरों का समूह, इन अक्षरों का उच्चारण तालु से होता है।

चवाई वि. (तत्.) बदनामी की चर्चा फैलाने वाला, दूसरों की बुराई करने वाला, निंदक।

चवाव पुं. (तत्.) 1. चारों ओर फैलने वाली चर्चा, अफवाह 2. बदनामी, निंदा, चुगलखोरी।

चशक स्त्री. यूरोपियों के बावर्चियों को विशेष अवसरों पर मिलने वाला भोजन।

चश्म स्त्री. (फा.) नेत्र, आँख, लोचन, नमन मुहा. चश्म बद दूर-बुरी नजर दूर हो टि. इस वाक्य का व्यवहार किसी चीज की प्रशंसा करते समय उसे नजर लगने से बचाने के अभिप्राय से किया जाता है।

चश्मक स्त्री. (फा.) 1. मनमुटाव, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष 2. चश्मा, ऐनक 3. आँख का इशारा।

चश्मदीद वि. (फा.) जो आँखों से देखा गया हो, प्रत्यक्षदर्शी (गवाह)।

चश्मा पुं. (फा.) 1. ऐनक, कमान्नी में जड़ा हुआ शीशे के तालों (लेंस) का जोड़ा जो आँखों पर लगाया जाता है 2. पानी का सोता/स्रोत 3. छोटी नदी 4. कोई जलाशय 5. सुई का छेद।

चषक पुं. (तत्.) 1. शराब पीने का प्याला 2. मधु, शहद 3. एक विशेष प्रकार की मदिरा।

चषण पुं. (तत्.) 1. भोजन, भक्षण 2. वध करना, क्षय करना, हनन करना।

चषाल पुं. (तत्.) यज्ञ के खंभे में पशु बाँधने के लिए लगी हुई लकड़ी या लोहे की फिरकी।

चसक स्त्री. (देश.) 1. हलका दर्द, कसक 2. मगजी के आगे लगाई जाने वाली पतली गोट।

चसकना अ.क्रि. (देश.) हलकी पीड़ा होना, मीठा दर्द होना, टीसना।

चसका पुं. (तत्.) 1. किसी चीज का मजा मिलने से उसे फिर करने, भोगने की इच्छा होना, शौक, चाव 2. इस प्रकार पड़ी हुई आदत, लत प्रयो. उसे शराब पीने का चसका लग गया है।

चसना अ.क्रि. (तद्.) 1. प्राण त्यागना, मरना 2. किसी ग्राहक का माल खरीदना 3. चखना, स्वाद लेना, चाटना 4. दो चीजों का एक में सटना, लगना, चिपकना।

चस्पा वि. (फा.) चिपकाया हुआ, सटाया हुआ।

चह पुं. (तत्.) 1. नदी में बल्ले गाड़कर तथा तख्ते बिछाकर बनाया हुआ अस्थायी पुल स्त्री. (फा.) गड़ढा, गर्त।

चहक पुं. (देश.) 'चहकना' का भाव, लगातार होने वाला पक्षियों का मधुर शब्द।

चहकना अ.क्रि. (अनु.) 1. पक्षियों का चहचहाना, आनंद में भरकर कलरव करना 2. प्रसन्नता से भरकर अधिक बोलना स.क्रि. जलाना, आग लगाना।

चहका पुं. (देश.) 1. ईंटों का फर्श, जलती हुई लकड़ी लुआठी 2. होली के अवसर पर गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत 3. कीचड़।

चहचहा पुं. (अनु.) 1. 'चहचहाना' का भाव 2. हँसी, दिल्लगी, चुहलबाजी, ठट्ठा।

चहचहाना अ.क्रि. (अनु.) पक्षियों का उमंग से आकर लगातार बोलना, चहकना।